श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेवटा
पूजन-आरती-चालीसा
स्तोत्र संग्रह

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेवटा**
पूजन-आरती-चालीसा स्तोत्र संग्रह

कृतिकार – **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति**
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – **प्रथम-2015** प्रतियाँ -1000

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विसौमसागरजी,**
क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था दीदी**
सपना दीदी

संयोजन – **सोनू दीदी, आरती दीदी ● मो. 9829127533**

प्राप्ति स्थल – **1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पद्मप्रभु जी - नेवटा**
तह. सांगानेर, जिला-जयपुर
2. जैन सरोवर समिति- जयपुर मो. 9414812008
3. शांतिलाल जी (कालाडेरा वाले) मो. 93092410641
4. नरेन्द्र जी बैनाड़ा (खटवाड़ा वाले) मो. 9351781838
5. हरीश जैन (दिल्ली) मो. 981815971

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्री शान्तिलाल जी - राजदेवी पाटनी
श्री बसन्तकुमार जी - कोमल पाटनी
श्री नवीन कुमार जी - सारिका पाटनी (कालाडेरा वाले)
सी-9, इन्द्रपुरी कॉलोनी, लालकोठी-जयपुर
फोन : 0141-2741011, 93092410641

एवं श्री दिगम्बर जैन मंदिर व्यवस्था समिति-नेवटा

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र–नेवटा

तह. सांगानेर–जिला : जयपुर (राज.)

नेवटा का इतिहास

राजस्थान प्रान्त के जयपुर जिला में सांगानेर मुहाना मण्डी जयपुर शहर के नजदीक नेवटा ग्राम में लगभग 400 वर्ष पुराना जिन मंदिर स्थापित है। नेवटा ग्राम में तत्समय लगभग 300–350 जैन परिवार जिनमें मुख्यता खिन्दूका (पाटनी) परिवार तथा जैनाग्रवाल परिवार निवास करते थे जिनमें से लगभग सभी जयपुर शहर में रहने लगे तथा नेवटा ग्राम में वर्तमान में कोई जैन परिवार नहीं रह रहा है। अति प्राचीन जिन मन्दिर धीरे–धीरे जीर्ण–शीर्ण अवस्था में पहुँच रहा था तथा नजदीक ग्राम खटवाड़ा से बैनाड़ा परिवार व पहाड़िया परिवार के सदस्य तथा पाटनी परिवार के सदस्य नियमित अभिषेक, पूजन आदि करने आया करते थे। सभी के भाव थे मंदिर का जीर्णोद्धार होना चाहिए। स्व. श्री दामोदरलाल जी बैनाड़ा की भावना के अनुसार उनके परिवार के सदस्यों ने मन्दिर प्रबन्धकारिणी कमेटी मंदिर खिन्दूकान, जयपुर जिन्होंने मंदिर व्यवस्था संभाली हुई थी। उनसे मंदिर जीर्णोद्धार कराने का निवेदन किया। अर्थ की कमी के कारण मन्दिर कार्यकारिणी ने असमर्थता जताई।

जिस पर बैनाड़ा परिवार ने निर्माण कार्य हेतु मंदिरजी के पूर्ण जीर्णोद्धार का भार उठाने का निवेदन किया, जिसे सभी ने स्वीकार किया तथा संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज के सुशिष्य मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से स्व. श्री हरिकृष्ण शर्मा (आर्किटेक्ट इंजीनियर) के दिशा–निर्देश में मंदिरजी में मौजूद अनेकों वास्तु दोषों तथा जीर्ण–शीर्ण अवस्था को देखते हुए मन्दिरजी को ठण्डा कर पुनर्निर्माण का निर्णय लिया गया और 4 जून 2009 को श्री पद्मप्रभु भगवान सहित अन्य प्रतिमाओं को अन्यत्र विराजमान कर दो वर्षों में निर्माण कार्य पूर्ण कर विराजमान करने का संकल्प लिया।

27 नवम्बर 2009 को श्री प्रकाशचन्द जी शशी जी सेठी (मुकुन्दपुरा वालों) के कर–कमलों से समस्त दिगम्बर जैन समाज, जयपुर की उपस्थिति में भव्य शिलान्यास समारोह आयोजित हुआ तथा अतिशयकारी श्री पद्मप्रभु भगवान की असीम अनुकम्पा से मन्दिरजी निर्माण तेजी से पूर्णता की ओर अग्रसर हुआ। बैनाड़ा परिवार के सदस्यों श्री भौंरीलाल जी, रतनलाल जी, मन्नालाल जी, नरेन्द्र जी, गोपाललाल जी समस्त परिवार व उनकी बहन–बेटियों के साथ सकल दिगम्बर जैन समाज के सदस्यों ने सहयोग किया ही लेकिन श्री सूरज देवी सेठी व उनके परिवार जन मुकुन्दपुरा वालों ने मन्दिरजी में मुख्य सहयोग प्रदान कर श्री प्रकाशचन्द जी सेठी–शशी जैन को परम शिरोमणि संरक्षक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा दो वर्ष की अल्पावधि में सुन्दर मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ। 27 मई

2011 को गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज की सुशिष्या 105 श्री विन्ध्यश्री माताजी ससंघ के सानिध्य में भव्य वेदी प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन हुआ श्रीजी को नवीन मन्दिर में विराजमान किया गया।

एक वर्ष उपरान्त गणाचार्य श्री विरागसागर जी के साथ 22 पिच्छियों के ससंघ सानिध्य में शिखर कलशारोहण का भव्य आयोजन हुआ। आचार्यश्री ने पदमप्रभु भगवान के दर्शन कर प्रतिमा को अतिशयकारी बताते हुए अपने उद्बोधन में कहा– जो भी श्रावक श्रद्धासहित अतिशयपूर्ण श्री पदमप्रभु का अभिषेक कर पूजन करता है, आरती–चालीसा पाठ आदि के साथ भक्तिपूर्वक श्रीफल चढ़ाते हैं। उनके रुके हुए सर्व कार्य पूर्ण होते हैं।

प्रतिमा के दर्शनार्थ आज जयपुर व आस–पास के गाँवों से दर्शनार्थी पहुँच रहे हैं, वही प्रत्येक मंगलवार को मेले का सा रूप होने लगा है। अल्प समय में ही अनेकों साधु बालाचार्य सिद्धसेन जी महाराज, आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज, सृष्टीभूषण माताजी, विशाश्री माताजी, विज्ञाश्री माताजी ससंघ के साथ अभी हाल ही में आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज ससंघ पधारे और दो दिन के अल्पवास में ही आचार्यश्री ने श्री पद्मप्रभु भगवान की महिमा में मनभावन पूजन–आरती–चालीसा की रचना कर नेवटा में एक इतिहास रच दिया है। प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागर जी के आशीर्वाद से मुनि श्री विशालसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से बैनाड़ा परिवार के बहन–बहनोई श्री शान्तिलाल जी–राजदेवी जी पाटनी को प्रस्तुत पुस्तक नेवटा का इतिहास पूजन–आरती–चालीसा का पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गुरुवर के श्री चरणों में इस महान् उपकार के लिए नमोऽस्तु के साथ सभी भक्तगण प्रस्तुत पुस्तक से पूजन–पाठ कर अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

विशेष– (1) मन्दिरजी शिलान्यास समारोह से लेकर सभी कार्यक्रम पं. श्री विमलजी बनेठा के निर्देशन में सम्पन्न हुए। (2) प्रभु के दर्शन मात्र से ही दर्शनार्थियों के कष्ट दूर हो रहे हैं। नरेन्द्र जी बैनाड़ा को स्वप्न आया कि नवनिर्मित मंदिर में एक नहीं तीन वेदियों का निर्माण होना चाहिए तत्नुसार तीन वेदियों का निर्माण करवाया गया।

(2) बिलाला गार्डन के सुरेन्द्र जी बिलाला की ज्वैलरी युक्त घड़ी गुम हो गई थी। प्रतिमा के समक्ष चालीसा पाठ करने से अनायास ही पुनः बरामद हो गई।

(3) 1½ वर्ष की अल्पावधि में दो मंजिला भवन मंदिर का निर्माण हुआ। मन्दिर से कुछ ही दूरी पर महेन्द्रा सिटी बसने से यह उजड़ा हुआ गाँव फिर से विकसित होने लगा है।

(4) यहाँ मन्दिर के दर्शन के साथ प्राकृतिक वातावरण भी रमणीय है। भक्तगण विशेष अवसरों पर पूजा–विधान कर गोठ का आयोजन भी करते रहते हैं।

प्रबन्धक : श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र – नेवटा

दर्शन पाठ

(भुजंग प्रयात) (तर्ज : नरेन्द्रं....)

रहें हे प्रभु हम तुम्हारी शरण में, मरण हो समाधी तुम्हारे चरण में।
मेरे प्राण निकलें तेरे दर्श पाते, मरण हो समाधी णमोकार ध्याते।।

महामोह मिथ्यात्व हमने बढ़ाया, अतः नाथ संसार अपना बढ़ाया।
अनादि से हमने जनम कई गँवाए, कभी नाथ तेरी शरण में ना आये।।

नरक नर पशु स्वर्ग में जन्म पाए, अनन्तों जनम प्राप्त कर दुःख पाए।
अब आये शरण में ये सौभाग्य पाए, ना बिछड़े कभी साथ यही भाव भाए।।

तेरे दर्श बिन हम नहीं चैन पाते, सताती हैं यादें तो आँसू बहाते।
बिना नीर मछली तड़पती है जैसे, तेरे दर्श बिन हों मेरे हाल वैसे।।

सकल ज्ञेय ज्ञायक प्रभु तुम कहाए, प्रभु आप अनुपम निजानन्द पाए।
है परम शांत मुद्रा प्रभु जी तुम्हारी, दुखी प्राणियों को सदा सौख्यकारी।।

तुम्हारे गुणों का सभी गान गाते, प्रभु माथ चरणों में अपना झुकाते।
नहीं चाह मन में मेरे कोई स्वामी, निजाधीन होके बनें मोक्षगामी।।

ज्यों पीयूष पीके सभी रोग जाते, नशे रोग पीयूष वाणी के पाते।
है विनती हमारी सुपद श्रेष्ठ पाएँ, 'विशद' सौख्य शास्वत अती शीघ्र पाएँ।।

रहे छत्र छाया प्रभु जी तुम्हारी, है मुक्ती की अब हे प्रभू मेरी बारी।
प्रभु शांति जिन हे परम शांतीदाता, 'विशद' शांति दो हमको शांती विधाता।।

मरण हो समाधी तेरे दर्श पाते, मेरे प्राण निकलें णमोकार ध्याते।
'विशद' भावना हम प्रभु नित्य भाते, चरण में प्रभु शीश अपना झुकाते।।

दोहा– भक्त चरण में भक्ति से, झुका रहे पद शीश।
हाथ उठाकर दीजिए, हमको शुभ आशीष।।

अद्याष्टक स्तोत्र

तर्ज – नित देव मेरी आत्मा

हे देव ! दर्शन आपका कर, जन्म मेरा सफल है।
शुभसंपदा अक्षय जो पाई, दर्श का ही सुफल है।।
नयन आज सफल हुए हैं, भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।1।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, अति गहन अपार है।
पार क्षण भर में मिला जो, गहन अति संसार है।।
पार होना है सरल अब, भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।2।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, नेत्र निर्मल हो गये।
सद्धर्म तीरथ में नहाकर, कर्म सारे खो गये।।
आज तन मेरा धुला है, भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।3।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, सफल मेरा जन्म है।
पार भवसागर का मिला यह, दर्श का ही सुफल है।।
सर्व मंगल पा लिए हैं, भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।4।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, कर्म की ज्वाला जली।
आज यह अतिशय हुआ, वसु कर्म की सेना चली।।
दुर्गती से मुक्ति जो पाई, हृदय मम् भक्ति जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।5।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, विघ्न सारे नश गये।
आज सब ग्रह सौम्य होकर, इक जगह में बस गये।।
ग्रह एकादश शांत करने, की लगन मन में जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।6।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, घोर दुःखदायक महा।
दुष्कर्म का बंधन बंधा था, आज वह भी न रहा।।
जीवन सुखी हो गया है अरु, भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।7।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, आज दुःखदायी सभी।
दुष्कर्म आठों नश गये हैं, दर्श करते ही अभी।।
शुभ सौख्य सागर में मगन हो, भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।8।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, तिमिर मिथ्या देह से।
नश गया है आज सारा, चेतना के गेह से।।
ज्ञान का आलोक पाया, शुभ भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।9।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, पुण्यात्मन् हो गया।
आज मेरा आत्मा से, पाप मल सब खो गया।।
हो गया त्रैलोक्य पूज्य, भक्ति मेरे उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।10।।

हे देव ! दर्शन आपका कर, अद्य अष्टक जो पढ़े।
प्रमुदित हृदय से मोक्ष पथ पर, शीघ्रता से वह बढ़े।।
सब ही प्रयोजन सिद्ध हों यह, 'विशद' भक्ति उर जगी।
पावन परम चरणों में दृष्टि, आपके मेरी लगी।।11।।

करुणाष्टक

(तर्ज– नित देव मेरी आत्मा...)

त्रिभुवन गुरो ! जिनवर परम्, आनंद कारण आप्त हो।
मुझ दास पर करुणा करो, अतिशीघ्र मुक्ति प्राप्त हो।।
तुम तरण तारण हो प्रभु, अब शरण अपनी लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।1।।

हे देव अर्हत् ! जगत् की, दुःखमय दशा को जानकर।
हो गया हूँ निर्विक्त मैं, इस जगत् को पहिचानकर।।
हो जन्म न फिर से प्रभु, अब शरण अपनी लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।2।।

हे देव अर्हत् ! भव भयंकर, कूप में मैं गिर गया।
तुम योग्य हो उससे निकालो, कीजिए मुझ पर दया।।
मैं पुनर्पुन विनती ये करता, शरण अपनी लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।3।।

हे देव ! तुम करुणानिधि हो, जगत् में तुम शरण हो।
मैंने पुकारा आपको तुम, श्रेष्ठ तारण तरण हो।।
मोह रिपु ने मद दलित, मेरा किया सुन लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।4।।

हे देव जिन ! पर के सताए, पुरुष पर करुणा करें।
ज्यों गाँवपति उर करुण होकर, और की विपदा हरें।।
त्रैलोक्यपति कर्मों से मेरी, आप रक्षा कीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।5।।

हे देव ! मेरा एक ही, वक्तव्य में यह है कथन।
करके दया अब मेंट दो, इस जगत से जीवन मरण।।

जिससे प्रलापी हो गया मैं, खेद वह हर लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।6।।
हे देव जिन ! मैं जगत् के, संताप से संतप्त हूँ।
चरणों की शीतल छाँव को, पाकर हुआ मैं तृप्त हूँ।।
अमृतमयी करुणा की छाया, में मुझे ले लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।7।।
हे ! पद्मनंदि गुरू से, स्तुत्य जग में इक शरण।
मैं आपके करता हूँ भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन्।।
मैं कहूँ क्या ? अति दास को, अपनी शरण ले लीजिए।
करुणानिधि करुणा करो, भव पार हमको कीजिए।।8।।

***

ऋषि मण्डल स्तोत्र

(शम्भू छंद)

आदि ''अ'' अक्षर ह अन्त, ख से लेकर व पर्यन्त।
रेफ में अग्नि ज्वाला नाद, बिन्दु युक्त अर्हं उत्पाद।।1।।
अग्नी ज्वाला सम आक्रान्त, मन का मल करता उपशांत।
हृदय कमल पर दैदीप्यमान, वह पद निर्मल नमूँ महान।।2।।
नमो अर्हद्भ्यः ईशेभ्यः, ॐ नमो नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ नमो सर्व सूरिभ्यः, ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः।।3।।
ॐ नमो सर्व साधुभ्यः, ॐ नमः तत्त्व दृष्टिभ्यः।
ॐ नमः शुद्ध बोधेभ्यः, ॐ नमः चारित्रेभ्यः।।4।।
अर्हन्तादिक पद ये आठ, स्थापन करके दिश आठ।
निज निज बीजाक्षर के साथ, लक्ष्मीप्रद हैं सुखकर नाथ।।5।।
पहला पद सिर रक्षक जान, द्वितीय मस्तक का पहिचान।
तीजा पद नेत्रों का मान, करें चतुष्पद नाशा त्राण।।6।।

पञ्चम मुख का रक्षक होय, ग्रीवा का छठवाँ पद सोय।
सप्तम पद नाभि का जान, अष्टम द्वय पद का पहिचान।।7।।
प्रणवाक्षर ॐ पुनः हकार, रेफ बिन्दुयुत हो शुभकार।
द्वय तिय पञ्चम षष्ठी जान, सप्त अष्ट दश द्वादश मान।।8।।
हीं नमः विधि के अनुसार, मंत्र बने शुभ अतिशयकार।
ऋषि मण्डल स्तवन शुभकार, श्रेयस्कर है मंत्र अपार।।9।।

जाप- ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो हीं नमः।

सिद्ध मंत्र में बीजाक्षर नव, अष्टादश शुद्धाक्षर वान।
भक्ती युत आराधक को शुभ, फलदायी है मंत्र महान।।10।।
जम्बूद्वीप लवणोदधि वेष्टित, जम्बू वृक्ष जिसकी पहचान।
अर्हदादि अधिपति वसु दिश में, वसु पद शोभित महिमावान।।11।।
जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरु, लक्ष कूट युत शोभावान।
ज्योतिष्कों के ऊपर ऊपर, घूम रहे हैं श्रेष्ठ विमान।।12।।
हीं मंत्र स्थापित जिस पर, अर्हंतों के बिम्ब महान।
निज ललाट में स्थित कर मैं, नमूँ निरंजन सतत् प्रधान।।13।।

(चौपाई)

जिन अज्ञान रहित घन गाए, अक्षय निर्मल शांत कहाए।
बहुल निरीह सारतर स्वामी, निरहंकार सार शिवगामी।।14।।
अनुद्धूत शुभ सात्विक जानो, तैजस बुद्ध सर्वरीसम मानो।
विरस बुद्ध स्फीत कहाए, राजस मत तामस कहलाए।।15।।
परपरापर पर कहलाए, सरस विरस साकार बताए।
निराकार परापर जानो, परातीत पर भी पहिचानो।।16।।
सकल निकल निर्भृत कहलाए, भ्रांति वीत संशय बिन गाए।
निराकांक्ष निर्लेप बताए, पुष्टि निरंजन प्रभु कहलाए।।17।।

ब्रह्माणमीश्वर बुद्ध निराले, सिद्ध अभंगुर ज्योती वाले।
लोकालोक प्रकाशक जानो, महादेव जिनको पहिचानो।।18।।
बिन्दू मण्डित रेफ कहाया, चौथे स्वर युत शांत बताया।
हीं बीज वर्ण सुखदायी, ध्यान योग्य अर्हत् के भाई।।19।।
एक वर्ण द्विवर्ण गिनाए, त्रिवर्णक चतु वर्णक गाए।
पञ्चवर्ण महावर्ण निराले, परापरं पर शब्दों वाले।।20।।
उन बीजों में स्थित जानो, वृषभादि जिन उत्तम मानो।
निज-निज वर्णयुक्त बिन गाए, सब ध्यातव्य यहाँ बतलाए।।21।।
'नाद' चंद्र सम श्वेत बताया, 'बिन्दु' नील वर्ण सम गाया।
'कला' अरुण सम शांत कहाई, 'स्वर्णाभा' चउदिश में गाई।।22।।
हरित वर्ण युत 'ई' शुभ जानो, 'ह र' स्वर्ण वर्ण मय जानो।
वर्णानुसार प्रभु को ध्याएँ, चौबिस जिन पद शीश झुकाएँ।।23।।
चन्द्र पुष्प जिन श्वेत बताए, नाद के आश्रय से शुभ गाए।
नेमि मुनिसुव्रत जिन जानो, बिन्दु मध्य में प्रभु को मानो।।24।।
कला सुपद शुभ है शिवगामी, वासुपूज्य पद्मप्रभ स्वामी।
ई स्थित सोहे मनहारी, श्री सुपार्श्व पार्श्व अविकारी।।25।।
शेष सभी तीर्थंकर जानो, ह र के आश्रय भी मानो।
माया बीजाक्षर में गाए, चौबिस तीर्थंकर बतलाए।।26।।
राग-द्वेष गत मोह कहाए, सर्व पाप से वर्जित गाए।
सर्वलोक में जिन शुभकारी, सदा सर्वदा मंगलकारी।।27।।

(चौपाई)

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सर्पों से न बाधा होय।।28।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, नागिन से न बाधा होय।।29।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, गोहों से न बाधा होय।।30।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, वृश्चिक से न बाधा होय।।31।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, काकिनि से न बाधा होय।।32।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, डाकिनि से न बाधा होय।।33।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, साकिनि से न बाधा होय।।34।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राकिनि से न बाधा होय।।35।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लाकिनि से न बाधा होय।।36।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शाकिनि से न बाधा होय।।37।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाकिनि से न बाधा होय।।38।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भैरव से न बाधा होय।।39।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राक्षस से न बाधा होय।।40।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्यंतर से न बाधा होय।।41।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भेकस से न बाधा होय।।42।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लीनस से न बाधा होय।।43।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मम ग्रह से न बाधा होय।।44।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चोरों से न बाधा होय।।45।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, अग्नि से न बाधा होय।।46।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, श्रृंगिण से न बाधा होय।।47।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दंष्ट्रिण से न बाधा होय।।48।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, रेलप से न बाधा होय।।49।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, पक्षी से न बाधा होय।।50।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मुद्गल से न बाधा होय।।51।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, जृंम्भक से न बाधा होय।।52।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मेघों से न बाधा होय।।53।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सिंहों से न बाधा होय।।54।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शूकर से न बाधा होय।।55।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चीतों से न बाधा होय।।56।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाथी से न बाधा होय।।57।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राजा से न बाधा होय।।58।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शत्रु से न बाधा होय।।59।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, ग्रामिण से न बाधा होय।।60।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दुर्जन से न बाधा होय।।61।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्याधि से न बाधा होय।।62।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सब जन से न बाधा होय।।63।।

(चौपाई)

श्री गौतम की मुद्रा प्यारी, जग में श्रुत उपलब्धी कारी।
उससे प्रखर ज्योति को पाए, अर्हत् सर्व निधीश्वर गाए।।64।।
देव सभी पाताल निवासी, स्वर्ग लोक पृथ्वी के वासी।
देव स्वर्ग वासी शुभकारी, रक्षा मिल सब करें हमारी।।65।।
अवधि ज्ञान ऋद्धि के धारी, परमावधि ज्ञानी अविकारी।
दिव्य मुनि सब ऋद्धिधारी, रक्षा वह सब करें हमारी।।66।।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, वैमानिक के रहे प्रवासी।
श्रुतावधि देशावधि धारी, योगी के पद ढ़ोक हमारी।।67।।

परमावधि सर्वावधि धारी, संत दिगम्बर हैं अविकारी।
बुद्धि ऋद्धी सर्वौषधि पाए, ऋद्धीधारी संत कहाए।।68।।
बल अनन्त ऋद्धी धर पाए, तप्त सुतप उन्नति बढ़ाए।
क्षेत्र ऋद्धि रस ऋद्धि धारी, ऋद्धि विक्रिया धर अविकारी।।69।।
तप सामर्थ्य मुनी अविकारी, क्षीण सद्म महानस धारी।
यतीनाथ जो भी कहलाते, उनके पद में हम सिरनाते।।70।।
तारक जन्मार्णव शुभकारी, दर्शन ज्ञान चारित्र के धारी।
भव्य भदन्त रहे जग नामी, इच्छित फल पावें हे स्वामी।।71।।

(शम्भू छंद)

ॐ श्री ह्री कीर्ति लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती।
क्लिन्नाजिता मद्द्रवा धृति, नित्या विजया जयावती।।72।।
कामांगा कामबाणा नन्दा, नन्दमालिनी अरु माया।
कलिप्रिया रौद्री मायाविनी, काली कला करें छाया।।73।।
रक्षाकारी महादेवियाँ, जिन शासन की सर्व महान।
कांति लक्ष्मी धृति मति दें, क्षेम करें सब जगत प्रधान।।74।।
दुर्जन भूत पिशाच क्रूर अति, मुद्गल हैं वेताल प्रधान।
वह प्रभाव से देव-देव के, सब उपशान्त करें गुणगान।।75।।
श्री ऋषि मण्डल स्तोत्र यह, दिव्य गोप्य दुष्प्राप्त महान।
जिन भाषित है तीर्थनाथ कृत, रक्षा कारक महिमावान।।76।।
रण अग्नि जल दुर्ग सिंह गज, का संकट हो नृप दरबार।
घोर विपिन श्मशान में भाई, रक्षक मंत्र रहा मनहार।।77।।
राज्य भ्रष्ट को राज्य प्राप्त हो, सुपद भ्रष्ट पद पाते लोग।
संशय नहीं हैं इसमें पावें, लक्ष्मी हीन लक्ष्मी का योग।।78।।
भार्यार्थी भार्या पाते हैं, पुत्रार्थी पाते सुत श्रेष्ठ।
धन के इच्छुक धन पाते हैं, नर जो स्मरण करें यथेष्ट।।79।।

स्वर्ण रजत कांसे पर लिखकर, उसे पूजते जो भी लोग।
शाश्वत महा सिद्धियों का वह, अतिशय पाते हैं संयोग।।80।।
शीश कण्ठ बाहू में पहनें, भूर्जपत्र पर लिखिये मंत्र।
भय विनाश होते हैं उनके, जो धारें अतिशय शुभ यंत्र।।81।।
भूत-प्रेत ग्रह यक्ष दैत्य सब, या पिशाच आदि कृत कष्ट।
वात पित्त कफ आदि रोग भी, हो जाते हैं सारे नष्ट।।82।।
भूर्भुवः स्वः त्रय पीठ स्थित, शाश्वत हैं जिनबिम्ब महान।
उनके दर्शन वन्दन स्तुति, श्रेष्ठ सुफल हैं जगत प्रधान।।83।।
महा स्तोत्र यह गोपनीय शुभ, जिस किसको न देना आप।
मिथ्यात्वी को देने से हो, पद-पद पर शिशु वध का पाप।।84।।
चौबिस जिन की पूजा द्वारा, आचाम्लादि तप के योग।
अष्ट सहस्र जापकर विधिवत्, कार्य सिद्ध करते हैं लोग।।85।।
प्रतिदिन प्रातः अष्टोत्तर शत्, इसी मंत्र का करते जाप।
सुख-सम्पत्ति पाते इच्छित, रोगों का मिटता संताप।।86।।
प्रातः आठ माह तक नित प्रति, इस स्तोत्र का करके पाठ।
तेज पुञ्ज अर्हन्त बिम्ब के, दर्शन से हों ऊँचे ठाठ।।87।।
सप्त भवों में भाव समाधि, जिन दर्शन से होते मुक्त।
परमानन्द प्राप्त करते हैं, होते शाश्वत सुख से युक्त।।88।।

दोहा- यह स्तोत्र महास्तोत्र है, सब संस्तुतियों युक्त।
पाठ जाप स्मरण कर, दोषों से हो मुक्त।।
कर स्तोत्र महास्तोत्र का, पाठ स्मरण जाप।
दोषों से मुक्ति मिले, 'विशद' मिटे संताप।।

।। इति ऋषि मण्डल स्तोत्र समाप्त।।

मंगलाष्टक (हिन्दी)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांती शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रय धारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।

पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

गुरु भक्ति

धर्म प्रभावक परम पूज्य हे !, तव चरणों में करूँ नमन्।
बुद्धि विकाशक प्रबल आपको, करते हम सादर वन्दन।।
परम शान्ति देने वाले हे !, गुरुवर करते हम अर्चन।
विशद सिन्धु गुण के आर्णव को, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

अभिषेक पाठ भाषा

–आचार्य विशदसागरजी

(शम्भू छंद)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू: स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नम: नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।

जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं हूँ ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ–प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतु: कोणेषु चतु: कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन ..... महंयजे।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अभिषेकान्ते अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

उदक चन्दन ..... महंयजे।

ॐ ह्रीं श्री अभिषेकान्ते वृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन ..... महंयजे।

ॐ ह्रीं श्री अभिषेकान्ते वृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

अथ वृहद् शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (...) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववेदनीय कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमोहनीय कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वायुःकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वनामकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वक्रोधं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमानं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमायां** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वलोभं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमोहं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वरागं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वद्वेषं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वगजभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि

सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूतपिशाचव्यंतर–डाकिनीशाकिन्यादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधि** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यान** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःखं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर–शिखामणि–त्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता अभयदानदायकसार्वभौम–धर्मसाम्राज्यनायकमहति–महावीरसन्मति–वीरातिवीर वर्धमाननामालंकृत श्री महावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणे भागे भरतक्षेत्रे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे.... प्रदेशे.... नामनगरे वीरसंवत्.... तमे.... मासे.... पक्षे... तिथौ... वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका–श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्थ मम च शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर ! पंचमचक्रवर्तिन् ! कामदेवरूप ! श्री शांतिजिनेश्वर ! **सुभिक्षं** कुरू कुरू **मनः समाधिं** कुरू कुरू **धर्मशुक्लध्यानं** कुरू कुरू

सुयशः कुरू कुरू **सौभाग्यं** कुरू कुरू **अभिमतं** कुरू कुरू **पुण्यं** कुरू कुरू **विद्यां** कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरू **श्रेयः** कुरू कुरू **सौहार्दं** कुरू कुरू **सर्वारिष्ट ग्रहादीनं** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय **आयुर्द्रायय** द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव–शांति कुरू कुरू ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थ मम च सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतू, प्रभु शांति धारा देते हैं।।

(अर्घ)

शांतिधारा करके हे प्रभु, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकार।
'विशद' शांति को पाने हेतू, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज–सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा..... ।। टेक।।
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है जग सारा– जिन शीश... ।।1 ।।
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा–जिन शीश... ।।2 ।।
गिरि तरुवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।
जो अकृत्रिम हैं ना निर्मित किसी के द्वारा–जिन शीश... ।।3 ।।
जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिन भक्ती बिन यह है संसार असारा–जिन शीश... ।।4 ।।
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा–जिन शीश... ।।5 ।।
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा–जिन शीश... ।।6 ।।
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा –जिन शीश... ।।7 ।।
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा–जिन शीश... ।।8 ।।

आचार्योपाध्याय–सर्वसाधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपथ के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

(दोहा)

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर–नर–किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन–जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजा पीठिका

(हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यभ्तंर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।

पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।1।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान।।2।।

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।

हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान।।

शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।शक्ति...।।4।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।शक्ति...।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।शक्ति...।।6।।

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।शक्ति... ।।7।।

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।शक्ति...।।8।।

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।शक्ति...।।9।।

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।। शक्ति...10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादि से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उनसे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ति हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए, अतः भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्वसाधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैनधर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नवदेव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नवकोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नी में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानंद छन्द

नव देव हमारे, जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते, जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोमि।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरितमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम्कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिनबिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।**
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

नेवटा के अतिशयकारी सूर्य ग्रह अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु भगवान की पूजा

(स्थापना)

जिनके यश गौरव की चर्चा, सारे जग में गाई जाती।
मंगल होता है चतुर्दिशा, जिनकी महिमा जग को भाती।।
जिनका पावन दर्शन करके, भवि जीव सुखी हो जाते हैं।
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा हर भक्त झुकाते हैं।।
नेवटा में पदम प्रभु स्वामी, अतिशय कई श्रेष्ठ दिखाए हैं।
अतएव विशद महिमा गाकर, आह्वानन् करने आए हैं।।

ॐ ह्रीं नेवटा ग्राम स्थित सर्वबंधन विमुक्त, सर्वमंगलकारी, ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज – माता तू दया करके...)

जन्मादिक रोग मिटे, जल चरण चढ़ाते हैं।
लाकर श्रद्धा का जल, त्रय धार कराते हैं।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन का लेप किया, पर राग ना मिट पाया।
यह दास चरण में अब, प्रभु भक्त बना आया।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।2।।

ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रूँ भ्रौं भ्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के पद अस्थिर हैं, क्षण भंगुर नश जाते।
तव पूजा करते जो, वह अक्षय पद पाते।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।3।।

ॐ म्राँ म्रीं म्रूँ म्रौं म्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के तरु पे, निज ज्ञान सुमन खिलते।
शुभ ज्ञान सुरभि पाने, आकर के भवि मिलते।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।4।।

ॐ प्राँ प्रीं प्रूँ प्रौं प्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर निर आहारी, जो ना आहार करें।
शरणागत का पल में, जिनवर उद्धार करें।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।5।।

ॐ घ्राँ घ्रीं घ्रूँ घ्रौं घ्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य गगन में शुभ, रवि ज्ञान चमकता है।
मोहान्ध महानाशी, शुभ दीप दमकता है।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।6।।

ॐ झ्राँ झ्रीं झ्रूँ झ्रौं झ्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ती ने, हे नाथ सताया है।
बल है अनन्त मेरा, ना ज्ञान में आया है।।

नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।7।।

ॐ श्राँ श्रीं श्रूँ श्रौं श्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल के दाता तुम, हे नाथ कहाते हो।
आनन्द का शुभ निर्झर, प्रभु आप बहाते हो।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।8।।

ॐ ख्राँ ख्रीं ख्रूँ ख्रौं ख्रः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की चाहत में, सदियों से दुःख सहे।
ना पद अनर्घ्य पाया, भटकाते सतत रहे।।
नेवटा के पदम प्रभू, हम तुमको ध्याते हैं।
तुम चरणों में स्वामी, निज माथ झुकाते हैं।।9।।

ॐ अ हाँ सि हीं आ हूँ उ हौं सा हः सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- समता भावी बन स्वयं, देते शान्ती धार।
शान्ती धारा कर विशद, हो जायें भवपार।।

शान्तये शान्तिधारा

दोहा- चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ती पाने को विशद, करते चरण प्रणाम।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण षष्ठी के दिन प्रभु, माता के उर में आए।
उपरिम ग्रैवेयक से चय कीन्हा, पृथ्वी पर आनन्द छाए।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को, भू पर पावन सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, पद्म प्रभु आधार मिला।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा त्रयोदश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को, प्रभु के मन वैराग्य जगा।
दीक्षा लेकर निज आतम के, चिंतन मनन में चित्त लगा।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिक वदि कृष्णा त्रयोदश्यां तपकल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल पूनम को प्रभु ने, केवलज्ञान जगाया था।
देवों ने जय-जयकारों से, यह भू-भाग गुँजाया था।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञान प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुण कृष्ण चतुर्थी को प्रभु, वसु कर्मों का हनन किए।
मोहनकूट सम्मेद शिखर से, मोक्ष महल को वरण किए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्णा चतुर्थयाम् मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : (1) ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक नेवटा स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः। (2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा- पदमप्रभ के चरण में, होती पूरण आस।
कल्मष होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास।।
तीन योग से प्रभू पद, वन्दन करें त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द तामरस)

जय पद्मनाथ पदमाथ नमस्ते, जोड़-जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर-नरकृत पद सेव नमस्ते।
पद्म प्रभु भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
पद झुकते शत् इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय-जय गुण गम्भीर नमस्ते।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन-जन के आधार नमस्ते।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनांगण में गमन नमस्ते।।
जय अम्बुज कृतपाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, कामजयी महावीर नमस्ते।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते।।
नेवटा पावन ग्राम नमस्ते, पद्म प्रभु भगवान नमस्ते।
लाल वर्ण शुभकार नमस्ते, पावन अतिशयकार नमस्ते।।
प्रभु हैं महिमावान नमस्ते, 'विशद' गुणों की खान नमस्ते।
करते जग उद्धार नमस्ते, भव सिन्धू से पार नमस्ते।।

ॐ ह्रीं सर्व रिद्धि-सिद्धि प्रदायक नेवटा ग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नेवटा के पद्म प्रभु, करो मेरा कल्याण।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम आपका लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(त्रिभंगी छन्द)*

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसु देव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सवेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ।।1 ।।

(छंद)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।**
मुक्ति पाने के लिए, करते 'विशद' प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

सर्वग्रहारिष्ट निवारक जिन पूजा

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादी से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है।।
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरू, अरु शुक्र शनि राहू केतु।
आह्वानन् करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांती हेतू।।
तुमने कर्मों का अन्त किया, फिर अर्हत् पद को पाया है।
प्रभु उभयलोक की शांति हेतु, मेरा भी मन ललचाया है।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनाः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(गीता छंद)

हम जन्म मृत्यु अरु जरा के, रोग से दुख पाये हैं।
उत्तम क्षमादि धर्म पाने, नीर निर्मल लाये हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के संताप से, मन में बहुत अकुलाए हैं।
अब भव भ्रमण से पार पाने, चरण चंदन लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके बहुत अटके जगत में, पार पाने आए हैं।
अक्षय निधी दो नाथ हमको, अक्षत चढ़ाने लाए हैं।।

नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय तृष्णा के भँवर में, जानकर उलझाए हैं।
ना काम का हो वास उर में, पुष्प लेकर आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

मन की इच्छाओं को प्रभुवर, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हम क्षुधा रोग को शांत करें, यह व्यंजन षट्रस लाए हैं।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दीपक की शुभ ज्वाला से, अंतर का तिमिर न मिट पाए।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप सुगंधित द्रव्यमयी, इस सारे जग को महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने हम आए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लौकिक फल की इच्छा कर, वह लौकिक फल सारे पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, तव चरण श्रीफल ले आए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, अरु दीप धूप फल ले आए।
वसु द्रव्य मिलाकर इसीलिए, यह अर्घ्य चरण में हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ !**
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ।। शांतये शांतिधारा

दोहा– **जगत पूज्य तुम हो प्रभो ! जगती पति जगदीश।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांति पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांति किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बुध पूर्ण नशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सुरगुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपारस, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्राग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ का ध्यान लगाए, ग्रहारिष्ट केतू नश जाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाय, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाय।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि–पार्श्व जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख–शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु–कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।**
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोला छन्द)

जगत गुरू को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन।।
नभ में अधर जिनालय में जिन, बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन नैवेद्य धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन।।1।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभु के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभु अरु, वासुपूज्य के वन्दन से।।
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिन देव।
शांति कुन्थु अर नमि सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव।।2।।
गुरु ग्रह की शांति हेतु हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयांस जिन, सम्भव सुमति पूजते आज।।
शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
शनिग्रह की शांति हेतु प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते।।3।।
राहु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, नेमिनाथ गुणगान करें।
केतु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें।।
वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थंकर हैं सुखकारी।
आधि व्याधि ग्रह शांति कारक, सर्व जगत मंगलकारी।।4।।
जन्म लग्न राशि के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित करते।
बुद्धिमान ग्रह नाशक जिनकी, अर्चा कर पीड़ा हरते।।
पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्र बाहु मुनिराज।
नवग्रह शांति विधि दाता पद, विशद वन्दना करते आज।।5।।

दोहा– **चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।**
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठा– **चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।**
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

पद अनर्घ पाने का, मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके, संसार बढ़ाया।।
अर्घ्य चढ़ाते चरण में, पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

सात करोड़ बहत्तर लाख, सु–भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।।
अब लख चौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधि कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, मध्य लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल ले शुभकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम–चैत्यालय सम्बंधिजिन बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

हम अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्यं बनाकर लाये हैं।
होगा अनन्त सुख प्राप्त हमें, यह भाव बनाकर आये हैं।।

हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
'विशद' हृदय में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, 'विशद' पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।

हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, हम बनें 'विशद' अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद हे स्वामी, तव चरणों विशद चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभू वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
अर्चा करते हम 'विशद' यहाँ, चरणों में शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्य

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है ।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है ।।
हम अर्घ्य 'विशद' यह लाए हैं, मन का संताप विनाश करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतू, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

कर्मों का घोर तिमिर छाया, मिथ्यात्व जाल फैलाए है।
हम भूल गये सद्राह प्रभो !, न पार उसे कर पाए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतू, यह अर्घ्य 'विशद' करते अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

हमने जग के सब द्रव्यों को, पाकर के कीन्हा जन्म–मरण।
अब पद अनर्घ हेतू प्रभुवर, यह अर्घ्य 'विशद' करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

हम पद अनर्घ न पाए, आठों पृथ्वी भटकाए।
'विशद' हम यह अर्घ्य लाए, पाने अनर्घ पद आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि–षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

हमने सच्चा स्वरूप, अब तक न पाया।
मेरा है चेतन रूप, उसको बिसराया।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ।।
द्वीप नन्दीश्वर 'विशद' महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, विशद भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य 'विशद', यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

शुभ महाशक्ति की पुंज द्रव्य, उससे यह अर्घ्य बनाए हैं।
पाने अनर्घ पद अविनाशी, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ्य

मन वचन काय हो अन्तर्मुख, विषयों से मन अब हट जाए।
शुभ पद अनर्घ्य पाने हेतू, यह अर्घ्य बनाकर हम लाए।।
हम सप्त ऋषी की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ 'विशद' संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण-ऋद्धिधारी श्री मन्व-स्वरमन्व-निचय-सर्वसुन्दर जयवान-विनयलालस-जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चा.च. आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ्य

पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें, हम शांती पाने आये हैं।
विशद भाव से पद पंकज में, अपना शीष झुकाये हैं।।

ॐ ह्रूँ चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर ! करुणाकर ।
हे तेज पुञ्ज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
विमल सिंधु के विमल चरण, से करुणा के झरने झरते ।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य समर्पण हम करते ।।

ॐ ह्रूँ सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश थाल में, अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर, अर्घ चढ़ाने आये हैं ।।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर, हमने तुम्हें बसाया है।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में, अपना शीश झुकाया है।।

ॐ ह्रूँ प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश मनोहर, अक्षत पुष्प चरू लाये।
दीप धूप अरु फल को लेकर, अर्घ्य चढ़ाने हम आये।।
हृदय कमल में राजें गुरुवर, सुन्दर सुमन बिछाते है।
भरत सिंधु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरतसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

समुच्चय महा-अर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधु गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नम: प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नम:। दर्शन-विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नम:। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नम:। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभयो नम:। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नम:। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नम:। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नम:। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नम:। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नम:। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नम:। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नम:, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नम:।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशंतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ भाषा

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादी से पूजित, जग का हरो सकल संताप।।
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार।।
शांतिदायक हे शांती जिन !, श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान।।
इन्द्रादी कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन !, हमको शांती करो प्रदान।।
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभ देश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन !, यही हमारा है उद्देश्य।।
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल।।

(चाल छन्द)

जिनघाती कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादिक जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी।।

हो शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढ़ाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ।।
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ।।
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ।।

दोहा- वर्ण अर्थ पद मात्र में, हुई हो कोई भूल।
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल।।
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष।।

***

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन ! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष।।
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव।।
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास।।
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाएँ अपने देश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा- लेकर जिन की आशिका, अपने माथ लगाय।
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय।।

(कायोत्सर्ग करें)

नेवटा ग्राम के अतिशयपूर्ण 1008 श्री पद्मप्रभु भगवान का चालीसा

दोहा– लाल वर्ण के शोभते, नेवटा में भगवान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
हरी–भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(चौपाई)

जय–जय पद्म प्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी।।1।।
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया।।2।।
शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।3।।
अस्त्र–शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे।।4।।
उपरिम ग्रैवेयक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हें।।5।।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी।।6।।
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए।।7।।
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया।।8।।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी।।9।।
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात–पिता के भाग्य जगाये।।10।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो।।11।।
इन्द्र करें जिनकी पद सेवा, जन्मे पद्म प्रभ जिनदेवा।।12।।
कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तव वहाँ मनाया।।13।।
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए।।14।।
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए।।15।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।16।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस तिथि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।।17।।
तृतिय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्त्र भूप सह दीक्षा पाए।।18।।

समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए।।19।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्य जीव सुनकर हर्षाए।।20।।
सम्यक् दर्शन कोई जगाए, सम्यक् चारित कोई पाए।।21।।
बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई।।22।।
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए।।23।।
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयु पाये हैं प्रभु नामी।।24।।
छदमस्थ काल छह माह का पाए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए।।25।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, योग निरोध महिने का पाए।।26।।
फाल्गुण शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ति पाए प्रभु अविकारी।।27।।
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए।।28।।
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ति पाई।।29।।
नेवटा गाँव रहा मनहारी, पदमप्रभु की प्रतिमा प्यारी।।30।।
लाल वर्ण की प्रतिमा सोहे, भवि जीवों के मन को मोहे।।31।।
दूर–दूर से यात्री आते, प्रभु के पावन दर्शन पाते।।32।।
भाव से जो चालीसा गाते, उनके सब संकट कट जाते।।33।।
मनोकामना पूरी करते, दुखियों के सारे दुख हरते।।34।।
पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।35।।
यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी।।36।।
धर्मी हो इस जग के प्राणी, पढ़ें–सुने हर दिन जिनवाणी।।37।।
नर जीवन को सफल बनावे, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें।।38।।
निज आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें।।39।।
हम भी सिद्ध शिला पर जाए, यही भावना पावन भावें।।40।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ।।
ऋद्धि–सिद्धि आनन्द हो, शांती मिले अपार।
'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का पार।।

महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

(चौपाई)

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।।1।।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान–वीर्य सुख पाए।।2।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।।3।।
चौंतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।4।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय–जयकार लगाए।।5।।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।6।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण–कमल तल कमल रचाते।।7।।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।8।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।।9।।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।10।।
प्रभो ! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।।11।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाते, सुर–नर–पशु सुनकर हर्षाते।।12।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभू कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।।13।।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभू प्रगटाते।।14।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।।15।।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।16।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशी।।17।।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।18।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।।19।।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तू वह तुमको न भाईं।।20।।

उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।।21।।
सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।22।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।।23।।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।24।।
सुख–शांती सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।।25।।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।26।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।।27।।
संवर करें निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।28।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें।।29।।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभू को हृदय बसाए।।30।।
स्वर व्यंजन आदी भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए।।31।।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी।।32।।
इस भव का सब वैभव पाए, उसके मन को वह न भाए।।33।।
तजकर जग का वैभव सारा, जिनने भेष दिगम्बर धारा।।34।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभू अनुगामी।।35।।
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी।।36।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ।।37।।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा।।38।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाएँ।।39।।
नित–प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।40।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख–शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण।।

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं झं वं व्हः पः हः मम सर्वापमृत्युञ्जय कुरु–कुरु स्वाहा।

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा– शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।।1।।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया।।2।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।।3।।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो।।4।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।।5।।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए।।6।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।।7।।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो।।8।।
द्वितिय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।।9।।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।10।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।।11।।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते।।12।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।।13।।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी।।14।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन–जन के मन को जो भाए।।15।।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए।।16।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।।17।।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली।।18।।
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।।19।।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो।।20।।

आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।।21।।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते।।22।।
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।।23।।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे।।24।।
कूट प्रभास है महिमा शाली, जिन सुपार्श्व पद चिह्नों वाली।।25।।
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए।।26।।
सिद्धकूट पर सुर–नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।।27।।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी।।28।।
दूर–दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।।29।।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते।।30।।
भाँति–भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।।31।।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशू गति बंध नशावें।।32।।
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।।33।।
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।।34।।
कभी स्वान बन कर आ जाते, डोली वाले बनकर आते।।35।।
गिरि की महिमा यह जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए।।36।।
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।।37।।
तुमरी धूल लगाकर माथें, भाव सहित तव गाथा गाते।।38।।
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।।39।।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए।।40।।

दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख–शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश।।
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार।।

जाप– (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः। (2) ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत तीर्थंकर निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

पंच परमेष्ठी की आरती

(तर्ज–आज करें हम....)

परमेष्ठी हैं पंच हमारे, सारे जग से न्यारे।
सबकी उतारे हम आरती, ओ भैया !
हम सब उतारें मंगल आरती....
कर्म घातिया नाश किये हैं, केवल ज्ञान जगाए–2 ।
दोष अठारह रहे न कोई–2, प्रभु अर्हत् कहलाए।।
प्रभु के द्वारे हम आये, भक्ति से शीश झुकाए।।
हम सब उतारें मंगल आरती....
अष्ट कर्म का नाश किया है, अष्ट गुणों को पाए–2 ।
अजर–अमर अक्षय पद धारी–2, सिद्ध प्रभु कहलाए।।
शिवपुर को जाने वाले, मुक्ति को पाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....
पंचाचार का पालन करते, शिष्यों से करवाते–2 ।
शिक्षा दीक्षा देने वाले–2, जैनाचार्य कहलाते।।
भक्ति हम उनकी करते, चरणों में मस्तक धरते।।
हम सब उतारें मंगल आरती....
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, पढ़ते और पढ़ाते–2 ।
मोक्ष मार्ग पर उपाध्यायजी–2, नित प्रति कदम बढ़ाते।।
मूल गुण पाने वाले, ज्ञान बरसाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....
विषय वासना हीन रहे जो, ज्ञान ध्यान तप करते–2 ।
'विशद' साधना करने वाले–2, कर्म कालिमा हरते।।
कर्मों को हरने वाले, मुक्ति को वरने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....

श्री आदिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : आज करें हम ..)

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।
जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।। हो जिनवर..
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर–नारी सब नाचे गाये, जय–जयकार लगाए।। हो जिनवर..
रत्नत्रय पाकर हे स्वामी!, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर, तुमने केवलज्ञान जगाया।। हो जिनवर..
यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।। हो जिनवर..
अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।। हो जिनवर..

नेवटा के 1008 श्री पद्म प्रभु जी की आरती

(तर्ज – करहुँ आरती आज...)

करहुँ आरती आज, पदम प्रभु तुमरे द्वारे।
तुमरे द्वारे स्वामी तुमरे द्वारे, विशद ज्ञान के ताज।।
पदम प्रभु तुमरे द्वारे।। टेक।।
मात सुसीमा के तुम प्यारे–2, धरण राज के राजदुलारे–2
कौशाम्बी महाराज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे – करहुँ आरती....
इन्द्रराज ऐरावत लाया–2, जिस पर प्रभुजी को बैठाया–2
न्हवन किया शुभकार, पदमप्रभु तुमरे द्वारे – करहुँ आरती....

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी स्वामी–2, जन्म लिए जिन अन्तर्यामी–2
किए सभी जयकार, पदमप्रभु तुमरे द्वारे – करहुँ आरती....
जाति स्मरण आपको आया–2, मन में तब वैराग्य जगाया–2
संयम धारा आप, जिनेश्वर तुमरे द्वारे – करहुँ आरती....
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी–2, मोहन कूट गये जगनामी–2
पाए शिव का राज, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे – करहुँ आरती....
'विशद' भावना हम यह भाएँ–2, पावन मोक्ष मार्ग अपनाए–2
मिले मोक्ष साम्राज्य, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे – करहुँ आरती....
नेवटा के प्रभु को जो ध्याते–2, वे अपने सौभाग्य जगाते–2
सफल होय सब काम, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे– करहुँ आरती....

नेवटा के 1008 श्री पद्म प्रभु जी की आरती

(तर्ज – आज थारी आरती उतारूँ...)

श्री पद्मप्रभु जिनराज, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ–2
प्रभु – करो मेरा उद्धार – आज थारी...
मात सुसीमा के सुत प्यारे–2, धरणराज के राज दुलारे–2
जन्मे कौशाम्बी ग्राम, आज थारी आरती उतारूँ..
श्री पद्मप्रभु जिनराज...
प्रभु जी भेष दिगम्बर धारे–2, वस्त्राभूषण आप उतारे–2
कीन्हा आतम ध्यान, आज थारी आरती उतारूँ..
श्री पद्मप्रभु जिनराज...
तुमने कर्म घातियाँ नाशे–2, आत्म ध्यान से ज्ञान प्रकाशे–2
करने जगत कल्याण, आज थारी आरती उतारूँ..
श्री पद्मप्रभु जिनराज...

जगमग दीपक हाथ में लेकर–2, प्रभु चरणों में शीश झुकाकर–2
तुम हो कृपा निधान, आज थारी आरती उतारूँ..
श्री पद्मप्रभु जिनराज...
प्रभु तुम तीन लोक के स्वामी–2, ज्ञाता द्रष्टा अन्तर्यामी–2
'विशद' ज्ञान के नाथ, आज थारी आरती उतारूँ..
श्री पद्मप्रभु जिनराज...
नेवटा में अतिशय दिखलाए–2, भक्त आपके दर्शन पाए–2
हुए कई चमत्कार, आज थारी आरती उतारूँ..
श्री पद्मप्रभु जिनराज...

आरती श्री पद्मप्रभु भगवान की

(तर्ज : ॐ जय...)

ॐ जय पद्मप्रभु देवा, स्वामी पद्मप्रभु देवा।
तुम बिन कौन जगत में मेरा, पार करो देवा।।
ॐ जय पद्मप्रभु देवा।। टेक।।
तुम हो अगम अगोचर स्वामी, हम है अज्ञानी–स्वामी–2..
अपरम्पार तुम्हारी महिमा–2, काहू न जानी।।
ॐ जय पद्मप्रभु देवा।।1।।
विघ्न निवारो संकट टारो, आये हम शरणा–2
कुमति हटा सुमति व दीज्यो–2, भक्त पड़े चरणा।
ॐ जय पद्मप्रभु देवा।।2।।
पाँव पड़े को पार लगाया, सुख–सम्पत्ति दाता–2
श्रीपाल का कष्ट हराकर–2, हुए आप त्राता।
ॐ जय पद्मप्रभु देवा।।3।।

सीता सती के अग्निकुण्ड को, शीतल कर दीना–2
बचा सभा में लाज द्रोपदी–2, चीर बढ़ा दीना।।
ॐ जय पद्मप्रभु देवा।।4।।
मात–पिता तुम सबके स्वामी, रक्षक हो मेरे–2
नेवटा ग्राम में आकर स्वामी–2, द्वार खड़े तेरे।।
ॐ जय पद्मप्रभु देवा।।5।।
जो कोई शरण तुम्हारी आये, नैय्या पार करो–2
सेवक चरणों में आये हैं–2, प्रभु जी पार करो।।
ॐ जय पद्मप्रभु देवा।।6।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
प्रभु कर दो भव से पार आज थारी...टेक।।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आखों के तारे।
जन्मे है काशीराज– आज थारी..... ।।1।।
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज– आज थारी आरती..... ।।2।।
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार– आज थारी आरती..... ।।3।।
दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्त्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार– आज थारी..... ।।4।।
'विशद' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन–जन के सुखकार– आज थारी आरती..... ।।5।।

श्री 1008 महावीर भगवान की आरती

ॐ जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो !
समवशरण में आप विराजे–2, हे जिनवीर प्रभो !
ॐ जय महावीर प्रभो ! ।। टेक।।

आषाढ़ सुदी षष्ठी को, गर्भ में प्रभु आए–2
दिव्य रत्न तब देव खुशी से–2, आके वर्षाए।। ॐ जय... ।।1।।

कुण्डलपुर में जन्म लिये प्रभु, जन मन हर्षाए–2
चैत्र शुक्ल तेरस को–2, अति मंगल छाए।। ॐ जय... ।।2।।

मंगशिर वदि दशमी को, प्रभु वैराग्य लिये–22
राज पाट–परिवार–स्वजन से–2, नाता तोड़ दिए।। ॐ जय... ।।3।।

दशमी सुदी वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगा–2
समवशरण तब राजगृही में–2, अतिशयकार लगा।। ॐ जय... ।।4।।

कार्तिक वदी अमावस, प्रभु महावीर स्वामी–2
पद्म सरोवर पावापुर से–2, हुए मोक्षगामी।। ॐ जय... ।।5।।

माँ त्रिशला के ललना, सिद्धारथ नन्दन–2
सात हाथ के ऊँचे–2, सिंह रहा लक्षण।। ॐ जय... ।।6।।

आयु बहत्तर वर्ष आपकी, स्वर्ण रंग पाए–2
आरति करने 'विशद' आपकी–2, हम भी प्रभु आए।। ॐ जय... ।।7।।

ॐ जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो !
समवशरण में आप विराजे–2, हे जिनवीर प्रभो !
ॐ जय महावीर प्रभो !

***

क्षेत्रपाल की आरती

आज करे हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2 ।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार ।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती ।। टेक ।। हो बाबा.....

छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।1 ।। हो बाबा.....

लाल लंगोट गले में कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।2 ।। हो बाबा.....

कानों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2
बाजूबंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।3 ।। हो बाबा.....

अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।4 ।। हो बाबा.....

सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2
पुत्रादिक धन सम्पत्ति की-2, वाञ्छा पूरी करते ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।5 ।। हो बाबा.....

पदमावती माता की आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है..)

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है ।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय-जयकार है ।। टेक ।।

माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी-2 ।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।1 ।।

जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी-2 ।
पुत्र-पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।2 ।।

शाकिन-डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी-2 ।
वात-पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।3 ।।

त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी-2 ।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन मोहे जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।4 ।।

दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी-2 ।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।5 ।।

कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्त्र नाम बतलाए जी-2 ।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।6 ।।

दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी-2 ।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।7 ।।

***

(1) भजन

रचयिता–शांतिलाल जैन पाटनी (कालाडेरा वाले)

धन्य हुई ये नेवटा नगरी, धन्य ये सकल समाज है।
भेष दिगम्बर विशदसागर जी, यहाँ विराजे आज हैं।।
यहाँ पधारे आज हैं..

इतनी सुन्दर सूरत है कि हर मन में बस जाती है।
कितनी बार निहारू इनको नैन न प्यास जाती है।।
सार्थक कर लो नर तन अपना छूलो गुरु के पांव रे।
भूल गया हूँ सारी बातें याद है इनका नाम रे।।
धन्य हुई ये नेवटा नगरी...

दो हजार सागर तक हमने भव ही भव देखे हैं।
जन्म मरण और जरा रोग के भव ही भव देखे हैं।।
औषधी लेकर आये गुरुवर, नेवटा नगरी के मांय रे।
भूल गया हूँ सारी बातें याद है इनका नाम रे।।
जब से चरण पड़े गुरुवर के, कालाडेरा के मांय रे।
भूल गया हूँ सारी बातें याद है इनका नाम रे।।
धन्य हुई ये नेवटा नगरी...

(2) भजन

रचयिता–शांतिलाल जैन पाटनी (कालाडेरा वाले)

ये देखो, ये देखो गुरुवर आये हैं।
ये देखो, ये देखो मुनिवर आये हैं।।
गुरुवर आये हैं जी मुनिवर आये हैं–2
ये देखो, ये देखो विशद सागर आये हैं–2

भोला भाला मुखड़ा है, सूरत इनकी मतवाली।
अपने भक्तों की करते सदा ये रखवाली।।

लाखों दीवानों को गुरु संभालने वाये हैं।
ये देखो, ये देखो विशद सागर आये हैं–2

गुरु पे भरोसा रखो, गुरु यहाँ आये हैं।
याद रखो गुरु को हम इनकी नजर समाये हैं।।
दिल से पुकारो गुरु को दर्शन देने आये हैं।
ये देखो, ये देखो विशद सागर आये हैं–2

कभी आप अपने को अकेला मत समझना।
पास में विराजे हैं गुरुदेव सलौना
जैसी इच्छा लेकर आये, वैसा ही फल पाया है।
ये देखो, ये देखो विशद सागर आये हैं–2

एक–एक भक्त की गुरुजी खबर रखते हैं।
उस देंगे गुरु जो, गुरु पे सबर रखते हैं।।
नेवटा नगरी में देखो अलख जगाने आये हैं।
ये देखो, ये देखो विशद सागर आये हैं–2

ये देखो, ये देखो गुरुवर आये हैं।
ये देखो, ये देखो मुनिवर आये हैं।।

(3) भजन

रचयिता–शांतिलाल जैन पाटनी (कालाडेरा वाले)

(तर्ज : तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण..)

आपके चरणों में हम, काटे अपने करम।
देवो सहारा, नमन हो गुरु शत्–शत् हमारा।।
नाथूरामजी के राजदुलारे, इन्द्रादेवी के हैं प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा।।
नमन हो गुरु शत्–शत् हमारा...

विरागसागर से दीक्षा पाई, माता–पिता ने शिक्षा दिलाई।
दोनों गुरु हैं बड़े, भाग्य इनके जगे, भव संवारा।
नमन हो गुरु शत्–शत् हमारा...

भाग्य जागे हैं गुरुवर हमारे, आप भक्तों के हैं प्राण प्यारे।
कर दो ऐसा यतन, हो समाधिमरण, आपके द्वारा।।
नमन हो गुरु शत्–शत् हमारा...

आपके चरणों में हम, काँटे अपने करम।
देवो सहारा, नमन हो गुरु शत्–शत् हमारा...

(4) भजन

रचयिता–शांतिलाल जैन पाटनी (कालाडेरा वाले)

म्हाकां विशद सागर महाराज–2
चरणां में जगांह दे दीज्यो, नित उठ जोडूँ हाथ।
म्हांका विशद सागर....

परम दिगम्बर रूप आपका, लगते प्यारे–प्यारे।
रहकर भी संसार में गुरुवर, आप हो जग से न्यारे।।
म्हांका विशद सागर....

जादू जैसे बोल आपके हृदय त्याग उपजाते।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से ज्ञान सूर्य चमकाते।।
म्हांका विशद सागर....

जैनाचार्य आदर्श रूप है विशदसागर कहलाते।
मन–वच–तन से पालन, पंच महाव्रत ध्याते।।
म्हांका विशद सागर....

गुरुवर मोरे मन मन्दिर, ज्ञान की ज्योति जलावो।
तरस रही प्यारी अँखियाँ, इनकी प्यास बुझावो।।
म्हांका विशद सागर....

रोज सवेरे दर्शन दीज्यो, रोज करां थांकी पूजा।
मेरे गुरुवर आप धणी सो, और न कोई दूजा।।
म्हांका विशद सागर....

ऐसी कृपा करज्यो गुरुवर, सालों साल थे आज्यो।
संकट की घड़ी में आकर दुःख मेटन को आज्यो।।
म्हांका विशद सागर....

जयपुर को समाज गुरुवर न नित उठ शीश नवावें।
सच्चा मन से करो पुकार, जब गुरुवर दयोड़ा आवें।।
म्हांका विशद सागर....

(5) भजन

रचयिता–शांतिलाल जैन पाटनी (कालाडेरा वाले)

वीतरागी संतों का तो बड़ा उपकार है–2
सुख शान्ती का तो ये बताया भण्डार है–2

अन्तर से राग छोड़ा, बाहर से वस्त्र रे।
मौन खड़े ध्यान करे, हाथ नहीं अस्त्र रे।।
देखूँ इन्हें बार–बार आते ये विचार रे।
सुख शान्ती का तो ये बताया...

आत्मा का चिन्तन है वाणी में आत्मा।
समरस सनी हुई, लीन हुई आत्मा।।
आत्मा ही सार है, ये इनकी पुकार है।
सुख शान्ती का तो ये बताया...

लगता है मानो कोई चलते–फिरते सिद्ध हो।
देखते ही धन्य हुई, मिली ऐसी निधी हो।।
हाथ जोड़ शीश नमूँ, इन्हें बारम्बार है।
वीतरागी संतों का तो बड़ा उपकार है–2
सुख शान्ती का तो ये बताया भण्डार है–2

(6) भजन

रचयिता–शांतिलाल जैन पाटनी (कालाडेरा वाले)

(तर्ज : जैन धर्म के हीरे–मोती मैं बिसराऊँ...)

क्या लेकर तू आया जग में, क्या लेकर तू जायेगा–2
सोच–समझ लेरे मन मूरख, आखिर में पछतायेगा–2
क्या लेकर तू आया जग में...

भाई–बन्धु मित्र तुम्हारे, मरघट तक संग जायेंगे–2
स्वार्थ के दो आँसू देकर, लौट के घर को आयेंगे–2
कोई नहीं तेरे संग चलेगा, काल तुझे ले जायेगा।
क्या लेकर तू आया जग में...

कंचन जैसी कोमल काया, तूरत जला दी जायेगी।
जिस नारी से विवाह किया था, वो भी दांव धरायेगी।।
एक महीना याद करेगी, फिर तू याद न आयेगा...
क्या लेकर तू आया जग में...

राजा रंक पूजारी पण्डित, सबको इक दिन जाना है।
आँख खोल के देख बावरे, जगत मुसाफिर खाना है।।
अन्त समय में पाप पुण्य ही तेरा साथ निभायेगा।
क्या लेकर तू आया जग में...

सुन्दर काया देख लुभाया, क्या इसको रख पायेगा।
मोह जाल में फंसकर बन्दे कितने पाप कमायेगा।।
कर ले प्रेम प्रभु से मनवा, भवसागर तर जायेगा।
क्या लेकर तू आया जग में, क्या लेकर तू जायेगा–2
सोच–समझ लेरे मन मूरख, आखिर में पछतायेगा–2

(7) भजन

रचयिता–शांतिलाल जैन पाटनी (कालाडेरा वाले)

इक बार भजन कर ले, मुक्ती का जतन कर ले।
कट जायेगी चौरासी, प्रभु का सुमिरन कर ले।।
इक बार भजन कर ले...

ये मानव का चौला, हर बार नहीं मिलता।
जो गिर जावे डाली से, वो फूल नहीं खिलता।।
मौका है सुनहरी ये, गुलजार चमन कर ले।
इक बार भजन कर ले...

नर इन कानों से सुन, तू ऋषियों की वाणी।
मन को ठहरा करके, तुम बनो आत्म ज्ञानी।।
जिह्वा तेरे मुख में, तू ओम नमन करले।
इक बार भजन कर ले...

तेरी मैली चादर में, है दाग भरे इतने।
पर ज्ञान के साबुन में, है झाग भरे इतने।।
धुल जायेगी सब स्याही, उजला तन–मन करले।
इक बार भजन कर ले...

वेदों से गुँज रही मंत्रों की मधुर धुनियां।
वरदान है तुझे इतना, पर गूंथे नहीं कलियां।।
अब तो गुरुवर आगे नीची गर्दन कर ले।
इक बार भजन कर ले...

इस भव में ना संभला, फिर संभल ना पायेगा।
जीवन की नैया को, अधबीच डूबायेगा।।
बेचैन क्यों फिरता है, तू ईश नमन कर ले।
इक बार भजन कर ले...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित 140 विधानों की विशाल श्रृंखला

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण धर्म विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह-1
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. लघु धर्मचक्र विधान
72. अर्हत् महिमा विधान
73. सरस्वती विधान
74. विशद महाअर्चना विधान
75. विधान संग्रह (प्रथम)
76. विधान संग्रह (द्वितीय)
77. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गाँव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
80. अर्हत् नाम विधान।
81. सम्यक् आराधना विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु मृत्युञ्जय विधान
84. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
85. मृत्युञ्जय विधान
86. लघु जम्बूद्वीप विधान
87. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
88. क्षायिक नवलब्धि विधान
89. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
90. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
91. वृहद् निर्वाण क्षेत्र विधान
92. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
93. तीन लोक विधान
94. कल्पद्रुम विधान
95. श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
96. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान (लघु)
97. सहस्त्रनाम विधान (लघु)
98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
99. त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
100. पुण्यास्त्रव विधान
101. सप्त ऋषि विधान
102. तेरह द्वीप मण्डल विधान
103. श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ मण्डल विधान
104. श्रावक व्रत दोष प्रायश्चित्त विधान
105. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
106. सम्यक् दर्शन विधान
107. श्रुतज्ञान व्रत विधान
108. ज्ञान पच्चीसी विधान
109. चारित्र शुद्धि विधान
110. लघु शांति विधान
111. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
117. षट् खण्डागम विधान
118. दिव्य देशना विधान
119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
120. नवग्रह शांति विधान
121. रक्षा बन्धन विधान
122. सोलह कारण विधान
123. तीर्थंकर विधान
124. गणधर वलय विधान (लघु)
125. गणधर वलय विधान (वृहद्)
126. गिरनार गिरि विधान
127. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
128. ऋषि मण्डल विधान
129. कालसर्प दोष निवारक विधान
130. शनि ग्रह अरिष्ट निवारक विधान
131. वास्तु विधान (लघु)
132. भक्तामर विधान (चौपाई)
133. पद्मावती विधान
134. क्षेत्रपाल विधान
135. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान
136. बड़े बाबा विधान
137. कल्पद्रुम विधान (लघु)
138. लक्ष्मी प्राप्ति विधान
139. महावीर समवशरण विधान
140. चान्दनपुर महावीर विधान
141. विशद पञ्चागम संग्रह
142. जिन गुरु भक्ति संग्रह
143. धर्म की दस लहरें
144. स्तुति स्तोत्र संग्रह
145. विराग वंदन
146. बिन खिले मुरझा गए
147. जिन्दगी क्या है
148. धर्म प्रवाह
149. भक्ति के फूल
150. विशद श्रमण चर्या
151. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
152. इष्टोपदेश चौपाई
153. द्रव्य संग्रह चौपाई
154. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
155. समाधितन्त्र चौपाई
156. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
157. संस्कार विज्ञान
158. बाल विज्ञान भाग-3
159. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
160. विशद स्तोत्र संग्रह
161. भगवती आराधना
162. चिंतवन सरोवर भाग-1
163. चिंतवन सरोवर भाग-2
164. जीवन की मनःस्थितियाँ
165. आराध्य अर्चना
166. आराधना के सुमन
167. मूक उपदेश भाग-1
168. मूक उपदेश भाग-2
169. विशद प्रवचन पर्व
170. विशद ज्ञान ज्योति
171. जरा सोचो तो
172. विशद भक्ति पीयूष
173. विशद मुक्तावली
174. संगीत प्रसून
175. आरती चालीसा संग्रह
176. भक्तामर भावना
177. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
178. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
179. विशद महा अर्चना संग्रह
180. विशद जिनवाणी संग्रह
181. विशद वीतरागी संत
182. काव्य पुञ्ज
183. पञ्च जाप्य
184. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
185. बिजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
186. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट-उपरोक्त विधानों में से आप अधिकाधिक पूजन विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। - मुनि विशालसागर